

तं भुरच मुरा माला परं वितं ॥ महा ते जं सुव ऊ धि धिर ॥ ल ह्र जि का भ यान
कः इति श्री महा काल साधनं किर्ति स्म मति भद्रस्य इति ॥ ॐ नमो श्री महा का
लाय ॥ गज चर्म स मारु ठं पत्न्या रि ठ पद स्थितः खर्व लं म्बो दर भी मंः भि ना जं
न सहितं सरि भं दल यिं गो र्ध के संच क्र च गाना ष्टु वि तं द श क त ल ल जि
का क या रा व लि स फ क ॥ सा ध नं न र सि र मा ला य धि तं यं च मू ढा वि भु धि तं

॥ मा. हां ॥

॥ २ ॥

व्याघ्रचर्मवरधर भिमविनेत्रवीकठानगाः एकवक्त्रकराखंषभुजंकोष्ठ
 विग्रहः हंकारनादसंभुतस्मशानाष्टमध्यसंखजाककर्त्तिसर्वषडभुजः
 कमण्डलुतथावामेकधारचवयाशतथैवच ॥ श्रुत्येषामहामतिनिघन
 भयस्यापिभयकल ॥ काला माता मलकोष्ठसर्वदृष्टिसुन्दरं ॥ भुतप्रेतदि
 शाचवैवहादिभिदिगयालंगेजश्वराक्षसक्रममः सेवितपुनम्याहः रत्न

काल
२

॥ महा ॥

॥ ३ ॥

त्रयायकायकारिनां नू संवनादुषचेतसाः ॥ तस्मान्नविनासा ॥ शाध
 यद्विधिमावृद्ध ॥ ॥ इति श्री महाकालनारायणनामधत्तभुजस्यमः
 हांकारसाधनयारिसमाप्तं ॥ शुभं ॥ जेधमहिनुप्रभाहेवज्रनेषा
 जौनिरव्ययेववादिमहाश्रवनं ॥ याहृषं प्रसदृष्टात्ताहृष्टं प्रसितं स
 यायदिशुद्धो वा अशुद्धो ममदोषो नदियते ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

काल
३

DH 110-3

धर्मरत्न ब्रह्माचार्य सुरत श्री महाबिहार

॥ ३ ॥ ५ ॥ ७ ॥